एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (मई, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

गर्मी के मौसम में डेयरी पशुओं की देखभाल

*रवि कुमार मीना[1] एवं जगपाल जोगी[2]
[1]डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ - पशुपालन, कृषि विज्ञान केन्द्र, दांता, बाड़मेर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: ravimeenj1996@gmail.com

भारत वर्ष विविध जलवायु एवं मौसमीय परिस्थितियों वाला देश है। इन मौसमीय परिवर्तनों का सीधा प्रभाव पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन क्षमता एवं प्रजनन पर पड़ता है। गर्मी का मौसम डेयरी पशुओं के लिए सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण माना जाता है। बढ़ते तापमान, तेज गर्म हवाओं, उमस एवं पानी की कमी के कारण पशुओं में "हीट स्ट्रेस" अर्थात उष्मा तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह स्थिति पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता, रोग प्रतिरोधक शक्ति, वृद्धि एवं प्रजनन क्षमता को प्रभावित करती है। विशेष रूप से संकर नस्ल की गायें एवं अधिक दूध देने वाले पशु गर्मी से अधिक प्रभावित होते हैं। गर्मी के मौसम में पशु सामान्य से कम चारा खाते हैं, अधिक पानी पीते हैं तथा सुस्ती एवं बेचैनी प्रदर्शित करते हैं। कई बार पशुओं में तेज सांस लेना, मुँह खोलकर सांस लेना, अत्यधिक लार गिरना, शरीर का तापमान बढ़ जाना एवं दूध उत्पादन में अचानक कमी जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। यदि समय रहते उचित प्रबंधन न किया जाए तो पशुपालकों को आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है। इसलिए गर्मी के मौसम में वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाकर पशुओं को स्वस्थ रखना अत्यंत आवश्यक है।

पशु आवास एवं ठंडक प्रबंधन

गर्मी के मौसम में पशुशाला का वातावरण ठंडा, स्वच्छ एवं हवादार होना चाहिए। जिससे सूर्य की सीधी किरणों का प्रभाव कम पड़ता है। यदि संभव हो तो दो शेड साथ-साथ बनाए जाने चाहिए ताकि धूप की दिशा के अनुसार पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया जा सके। पशुशाला के आसपास नीम, पीपल, बरगद एवं अन्य छायादार वृक्ष लगाने चाहिए, जिससे तेज धूप एवं गर्म हवाओं से बचाव हो सके। गर्म हवा के सीधे प्रवाह को रोकने के लिए मुख्य द्वार एवं खिड़कियों पर गीली बोरी, टाट या खस टाँगना लाभकारी होता है। इससे पशुशाला के भीतर ठंडक बनी रहती है। टीन या एस्बेस्टस की छत गर्मी अधिक उत्पन्न करती है, इसलिए उसके ऊपर 4–6 इंच मोटी घास-फूस या अन्य ऊष्मारोधी सामग्री बिछानी चाहिए। पशुशाला में क्षमता से अधिक पशुओं को नहीं रखना चाहिए, क्योंकि अधिक भीड़ होने से गर्मी एवं उमस बढ़ जाती है। गर्मी से राहत देने के लिए पंखे, कूलर, फॉगर्स एवं स्प्रिंकलर सिस्टम का उपयोग करना चाहिए। भैंसों के लिए पानी में बैठने की व्यवस्था अत्यंत लाभकारी होती है, क्योंकि इससे शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है।

आहार एवं पानी का प्रबंधन

गर्मी के मौसम में पशुओं की भूख कम हो जाती है, इसलिए संतुलित एवं सुपाच्य आहार देना आवश्यक है। हरे चारे का उपयोग इस मौसम में अधिक करना चाहिए क्योंकि इसमें 70–90 प्रतिशत तक पानी होता है, जो पशुओं के शरीर में जल की कमी को पूरा करने में सहायक होता है। साथ ही पशु हरे चारे को अधिक चाव से खाते हैं। सूखे चारे जैसे भूसा एवं कुट्टी का उपयोग कम करना चाहिए क्योंकि ये पाचन पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं। इसके स्थान पर संतुलित दाना एवं रसदार चारा देना अधिक लाभकारी होता है। चारा सुबह जल्दी एवं शाम के समय खिलाना चाहिए, क्योंकि उस समय तापमान अपेक्षाकृत कम रहता है। गर्मी में पानी पशुओं की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता बन जाता है। पशुओं को दिन में कम से कम तीन बार स्वच्छ एवं ठंडा पानी अवश्य पिलाना चाहिए। एक स्वस्थ पशु को जीवन निर्वाह हेतु लगभग 25–30 लीटर पानी की आवश्यकता होती है, जबकि प्रत्येक लीटर दूध उत्पादन के लिए

लगभग 3 लीटर अतिरिक्त पानी की आवश्यकता पड़ती है। पानी में थोड़ा नमक, आटा या गुड़ मिलाकर पिलाने से शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है। गर्मी के मौसम में पशुओं को दिन में 2–3 बार पानी से धोना चाहिए ताकि शरीर का तापमान नियंत्रित रहे। संकर नस्ल के पशुओं में तीव्र ज्वर जैसी समस्या सामान्य रूप से देखने को मिलती है, जिसे नियमित स्नान एवं ठंडक प्रबंधन द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

विटामिन, खनिज एवं स्वास्थ्य प्रबंधन

गर्मी के मौसम में पशुओं में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, इसलिए विटामिन एवं खनिज लवण मिश्रण का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। बड़े पशुओं को 30–50 ग्राम, बछियों को 25–30 ग्राम तथा छोटे पशुओं को 10–15 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन देना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर तनावरोधी दवाओं का भी उपयोग किया जा सकता है। गर्मी के मौसम में कई प्रकार की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। लू लगना, अपच, ग्रीष्मकालीन थनैला, बाह्य परजीवी संक्रमण तथा जीवाणु एवं विषाणु जनित रोग इस मौसम में अधिक देखने को मिलते हैं। लू लगने की समस्या मुख्यतः संकर नस्ल, मोटे अथवा कमजोर पशुओं में अधिक होती है। पशु बेचैन हो जाते हैं, शरीर का तापमान बढ़ जाता है, अधिक पसीना एवं लार गिरती है तथा दूध उत्पादन कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में पशुओं को ठंडी एवं आरामदायक जगह पर रखना चाहिए तथा रसदार चारा एवं पर्याप्त पानी उपलब्ध कराना चाहिए। गंभीर स्थिति में पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करवाना चाहिए। गर्मी में अपच की समस्या भी सामान्य है। अधिक गर्मी के कारण पशु मुँह खोलकर सांस लेते हैं, जिससे लार की कमी हो जाती है और रूमेन में पाचन प्रभावित होता है। पशु खाना कम कर देते हैं, पेट फूल जाता है तथा उत्पादन घटने लगता है। ऐसे समय में स्वादिष्ट एवं सुपाच्य चारा देना चाहिए तथा पाचन बढ़ाने वाली दवाओं का उपयोग पशु चिकित्सक की सलाह पर करना चाहिए।

थनैला एवं बाह्य परजीवी नियंत्रण

गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं में थनैला (मास्टाइटिस) की समस्या अधिक देखने को मिलती है। पशुशाला में साफ-सफाई की कमी, गलत तरीके से दुग्ध दोहन तथा जीवाणु संक्रमण इसके प्रमुख कारण हैं। इस रोग में थनों में सूजन, कड़ापन, दर्द तथा दूध में खून या मवाद आने जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। इससे बचाव के लिए स्वच्छ दूध उत्पादन तकनीक अपनानी चाहिए तथा पशुशाला को साफ रखना चाहिए। गर्म एवं आर्द्र वातावरण में मक्खी, मच्छर एवं किलनी जैसे बाह्य परजीवियों का प्रकोप बढ़ जाता है। ये न केवल दूध उत्पादन घटाते हैं बल्कि कई प्रोटोजोआ रोगों के प्रसार का कारण भी बनते हैं। पशुओं को सप्ताह में कम से कम एक बार नीम के पानी से धोना चाहिए। नीम या करंज के तेल का उपयोग भी लाभकारी होता है। डेल्टा-मेथरिन जैसी कीटनाशी दवाओं का उचित मात्रा में उपयोग पशु चिकित्सकीय सलाह अनुसार किया जा सकता है।

संक्रामक रोगों से बचाव

गर्मी के मौसम में गला घोंटू, खुरपका-मुँहपका एवं अन्य जीवाणु एवं विषाणु जनित रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है। इन रोगों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण करवाना अत्यंत आवश्यक है। पशुओं में किसी भी प्रकार के रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। नियमित सफाई, उचित पोषण एवं स्वच्छ पानी उपलब्ध कराने से रोगों की संभावना को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष

गर्मी का मौसम डेयरी पशुओं के लिए अत्यंत संवेदनशील समय होता है। यदि इस मौसम में वैज्ञानिक एवं संतुलित प्रबंधन अपनाया जाए तो पशुओं को हीट स्ट्रेस, रोगों एवं उत्पादन में कमी जैसी समस्याओं से बचाया जा सकता है। उचित आवास, स्वच्छ पानी, पौष्टिक आहार, खनिज मिश्रण, नियमित स्नान, साफ-सफाई एवं समय पर स्वास्थ्य देखभाल से पशुओं को स्वस्थ रखा जा सकता है। स्वस्थ पशु ही अधिक उत्पादन देते हैं और पशुपालकों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए प्रत्येक पशुपालक को गर्मी के मौसम में विशेष सावधानी एवं वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाना चाहिए, ताकि पशुधन सुरक्षित रहे और डेयरी व्यवसाय अधिक लाभकारी बन सके।